

Inhalt

| | |
|--|-----|
| Vorwort | 7 |
| Warum ich schreibe | 8 |
| Erste Reise in die BRD | 9 |
| Vom Kaukasus nach Stalingrad | 13 |
| Gefangen | 16 |
| Millerowo | 20 |
| Im Zug | 23 |
| Großlazarett Slawuta | 25 |
| Spezialist für Rassenselektion | 34 |
| Auf dem Weg nach Deutschland | 37 |
| Zur Arbeit eingeteilt | 40 |
| Das „Kaputt-Kommando“ | 43 |
| Wir erfahren vom Sieg bei Stalingrad | 48 |
| Stalag 6 D | 51 |
| Zwischen Iserlohn und Nachrodt | 53 |
| Ich werde ins Krankenrevier gebracht | 56 |
| Wir gründen eine illegale Organisation | 62 |
| Die Schrift am Tor | 67 |
| Französische Kriegsgefangene | 69 |
| Deutsche Arbeiter | 73 |
| Wieder im Krankenrevier | 78 |
| Der Kampf geht weiter | 82 |
| Zigarettenetuis und Spielzeug | 85 |
| Das Dortmunder Bier | 89 |
| Die Befreiung | 93 |
| Rückblende | 103 |
| Die Suche | 104 |
| Wir waren nie allein | 107 |
| Bittermark 1968 | 114 |
| Wahrheit bringt Vertrauen | 118 |
| „Der Kosmos im Dienst des Friedens“ | 119 |
| Ein Strauß roter Nelken | 123 |
| Wostok landet in Dortmund | 125 |
| Eine Hochzeit | 127 |

| | |
|--|-----|
| Wir hätten einander töten können | 130 |
| In der Ausstellung „Sibirien“ | 134 |
| In Hamburg | 140 |
| Partnerstädte | 144 |
| In Krefeld | 148 |
| Was tun für die Jugend? | 153 |
| Besuch beim Ostermarsch | 161 |
| Appell von Dortmund | 167 |
| Bittermark 1985 | 171 |